International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-03-2022, Accepted: 16-03-2022, Published: 31-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 51-53

लघुकथाओं में बिखरा हास्य एवं व्यंग्य

गौरव शर्मा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
वैसे तो व्यंग्य अपने आप में स्वतंत्र विधा रही है जो कि सामाजिक, राजनीतिक बदलाव के कारण बदलते मानव व्यवहार को उजागर करने के लिए काम में ली जाती है परंतु रचनाकार कहानियों, कविताओं, लघुकथाओं, उपन्यासों आदि में व्यंग्य का प्रयोग कर जीवन में आई समस्या को एक दम से उभारकर पाठक के सामने लाता है ताकि सहृदय उसको अपनी समस्या जान उसके समाधान में जुट जाये। हरिशंकर परसाई जी ने तो हास्य एवं व्यंग्य को स्वतंत्र रूप से लिखा है। उन्होंने सत्ता और समाज में फैली बुराइयों पर हास्य और व्यंग्य को माध्यम बनाकर तीखा प्रहार किया है। जो व्यंग्य मानवीय कुंठाओं और भावनाओं पर किये जाते हैं वे अधिक स्थायी और प्रभावी होते हैं। लघुकथाओं में भी इसी गहरी मानवीय संवेदना का परिचय देकर समाज के विभिन्न भागों में पल रही कुंठाओं को बेनकाब किया गया है और व्यक्ति का सत्य से साक्षात्कार करवाया है। साहित्य में हास्य को फूहड़ता का विषय मन जाता रहा है परंतु हास्य में व्यंग्य को मिलाकर लघुकथाकारों ने इसे सार्थक एवं यथार्थ बना दिया है। व्यंग्य में कथ्य की अपेक्षा प्रस्तुति का महत्व अधिक होता है। व्यंग्यकार का एक–एक शब्द ऐसा धारदार होता है जो कि सीधे पाठक के हृदय पर आघात करता है किंतु जब उसे हास्य से जोड़ दिया जाता है तब वह चुटीला और प्रिय बन जाता है। हास्य–व्यंग्य एक मीठी छुरी के समान है जो बड़ी सरलता से मन में छिपी सच्चाई को बाहरी आवरण भेदकर प्रकट कर देता है।

मूल शब्दः लघुकथा, लघुकथाकार, हास्य, व्यंग्य, समस्या, साहित्य

प्रस्तावना
साहित्यकार अपनी विधा को युगानुरूप चुनता है और उसे अपनी समझ के हिसाब से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। जब स्रष्टा अपनी अनुभूतियों को प्रचलित विधाओं में अभिव्यक्ति नहीं दे पाता, तब वे अपूर्ण लगने लगती हैं फिर उसे किसी नई विधा की तलाश करनी पड़ती है। इसी के फलस्वरूप आधुनिक काल में उपन्यास, कहानी, नाटक, जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, एकांकी, संस्मरण आदि अनेक विपुल एवं समृद्ध विधाएं होने के बावजूद भी लघुकथा विधा को अस्तित्व में आना पड़ा। क्योंकि लघुकथा ने साहित्य में अपने लिए जो स्थान ईजाद किया है उसका विकल्प कुछ और था ही नहीं। वास्तव में यदि गहराई से देखा जाये तो मालूम चलता है कि आधुनिक हिंदी लघुकथा ही नहीं अपितु कहानी, उपन्यास आदि विधाएँ भी हमारी प्राचीन समृद्ध साहित्यिक विरासत की ऋणी हैं। इस सबका पूर्वावलोकन लोककथाओं में किया जा सकता है। राजेन्द्र यादव इस संबंध में लिखते हैं, "मुझे ऐसा भी लगता है कि लघुकथा और नाटक यही दो विधाएँ ऐसी हैं जिन्हें हम परंपरा रूप से निर्बाध पाते हुए देखते हैं, उनका कथ्य बदल गया है। कहने का तरीका बदल गया है, लेकिन परंपरा के साथ जुड़ने वाली विधाएँ मुझे नाटक और लघुकथा ही लगती है।"[1]
लघुकथा अपनी व्यापक सम्प्रेषणीयता एवं प्रभावोत्पादकता के होने पर भी आकारलघुता के कारण अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनी हुई है। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिंदी में जिन गद्य–विधाओं का आविर्भाव और विकास हुआ उनमें लघुकथा की लोकप्रियता और स्थान दोनों विशिष्ट हैं। लघुकथाओं का कारवां लिपि के आविष्कार के पहले से लगातार लोककथाओं के प्रतिबिम्ब में उभरता चला आ रहा है। लिपि एवं भाषा की परिष्कृति से संलग्न ही लघुकथाएँ लिखी जा रही हैं। फूलचंद्र पाण्डेय हिंदी साहित्य के विषय में लिखते हैं कि "हिंदी साहित्य का संबंध भारतीय प्राचीन वाङ्गमय से इतना बना है कि उसकी छाया से किसी प्रकार अलग करते हुए साहित्य के किसी अंश को देखना कठिन ही नहीं असम्भव है।"[2]
यह बात सच है कि अंग्रेजी शिक्षा एवं साहित्य ने हिंदी साहित्य को और विशेषतः हिंदी गल्प–साहित्य को प्रभावित एवं प्रेरित किया परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि भारतीय साहित्य परंपरा में गल्प–साहित्य पूर्णतः अनुपलब्ध था। संस्कृत के पौराणिक साहित्य, कथा–काव्यों की समृद्ध परंपरा, पाली की जातक कथाओं, प्राकृत तथा अपभ्रंश के विविध साहित्यिक रूपों में गल्प–साहित्य प्रचुर मात्रा में दिखाई देता है। हिंदी में लघुकथा के चिह्न लोककथाओं, नीति–बोध कथाओं, पंचतंत्र, हितोपदेश, जातक कथाओं और दृष्टांत कथाओं आदि में ढूंढे जा सकते हैं। लेकिन आलोचकों ने लघुकथा की सटीक आरम्भ सीमा 20वीं शताब्दी को माना है। इस संबंध में बलराम जी ने लिखा भी है, "आधुनिक लघुकथा के बीज आधुनिक हिंदी कहानी के उद्गम के आसपास ही कहीं बिखरे हुए लगते हैं।"[3]
हिंदी की पहली लघुकथा को लेकर भी मतैक्य नहीं है परंतु अधिकतर लोगों ने माधवराव सप्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिंदी की पहली लघुकथा माना है। हिंदी साहित्य की कहानी, उपन्यास, नाटक या अन्य सशक्त विधाएँ होने के बावजूद आज लघुकथा इसलिए अधिक महत्वपूर्ण बन बैठी है क्योंकि यह मानव जीवन की विसंगति, विद्रूपता और विषमता के क्षणों को छोटे कलेवर में बड़ी सार्थकता के साथ पकड़ती है। लघुकथा को परिभाषित करते हुए सतीश दुबे लिखते हैं कि "लघुकथा विराट जीवन से जुड़े सूक्ष्म के चित्रण का सशक्त कथा माध्यम है।"[4]

लघुकथा कहानी की उपविधा न होकर अपने आप में एक ऐसी स्वतंत्र गद्यात्मक विधा है जिसकी सम्पूर्ण भावना किसी काल–सत्य या समय–सत्य के किसी विशेष प्रश्न को उभारना रहती है। साथ ही यह अपनी शाब्दिक मितव्ययता, विचारगत तीक्ष्णता, कथ्यगत गहनता, संवेदनात्मक उष्णता, भाषिक कलात्मकता एवं शिल्पगत गाम्भीर्य के कारण एक सफल, सटीक और सशक्त कथा प्रकार है।[5]

लघुकथाओं में जीवन के लगभग सभी पक्षों पर लघुकथाकारों ने लिखा है चाहे वह राजनीतिक हो, सामाजिक हो, आर्थिक हो या मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा हो, जीवन का यथार्थ हर हाल में प्रस्तुत करना इन लघुकथाकारों का उद्देश्य रहा है। लघुकथाओं में समस्याओं को केवल समस्या के रूप में ही प्रस्तुत नहीं किया गया है बल्कि हास्य और व्यंग्य का सहारा लेकर लघुकथाकारों ने उन समस्याओं पर करारी चोट की है। यह व्यंग्य का अंदाज लघुकथाओं में हास्य को साथ लेकर चलता है जिससे व्यंग्य चुटीला बन गया है जो पाठक को चुभता नहीं है बल्कि हंसते हुए सोचने पर मजबूर करता है। वैसे हिंदी साहित्य में हास्य एवं व्यंग्य का इतिहास पुराना है परंतु समीक्षक इसे भारतेन्दु काल की देन मानते हैं। चूंकि लघुकथा नई विधा के रूप में आठवें–नवें दशक में स्पष्ट तौर पर सामने आ चुकी थी इसलिए हास्य एवं व्यंग्य की शुरुआत इसमें आठवें दशक से मानी जा सकती है।

आज के दौर में व्यक्ति जब थोड़ी प्रतिष्ठा और दौलत हांसिल कर लेता है तब वह अपने सगे–संबंधियों से किस कदर दूर हो जाता है 'कुहनी की चोट' लघुकथा में लघुकथाकार इसी समस्या पर व्यंग्य करते हुए लिखती हैं– "बहन के वैभव और व्यस्तता को देखकर उसे सूझ नहीं रहा था कि बात क्या करे? क्या पूछे? इतने बड़े व्यापारी जीजा के यहाँ आने का साहस वह आजतक नहीं जुटा पाया था। कुछ क्षण बहन उसके पास बैठी तो बड़ा साहस जुटा कर उसने पूछ ही लिया– जीजी, क्या तुम्हें कभी मेरी याद आती है?"[6]

लघुकथाओं में बिखरा हास्य मनोरंजन नहीं करता बल्कि मन को झकझोर देता है, पाठक की चेतना को जाग्रत कर उसकी आंखें खोलकर सच दिखाने का काम करता है। हमारे जीवन के कई महत्वपूर्ण पहलू हैं जिनका सम्बन्ध केवल यथार्थ से ही है इनको बिना हास्य–व्यंग्य के चित्रित ही नहीं किया जा सकता। हास्य–व्यंग्य ही वह पैना हथियार है जो सामाजिक पाखंड और राजनीतिक दोगलेपन की परतों को उधेड़ सकता है। लघुकथाकारों ने इसी हास्य–व्यंग्य शैली का प्रयोगकर लघुकथाओं में विसंगतिपूर्ण राजनीति, साहित्यिक दलबंदी, प्रशासनिक भ्रष्ट प्रवृत्तियों, सामाजिक–धार्मिक विषमताओं पर तीखा प्रहार किया है। ऐसे ही राजनीतिक दोगलेपन को 'फोकस' लघुकथा संग्रह में लघुकथाकार ने बेहद सटीक एवं सार्थक ढंग से उजागर किया है। राजनीति के वर्तमान मंतव्य और राजनेताओं के दोहरे चरित्र को रचनाकार ने अपनी लघुकथाओं का व्यंग्य विषय बनाया है। 'सदाबहार मुद्दा' लघुकथा में सुनील विकास चौधरी चुनावी मुद्दों का सच सामने लाते हुए राजनीति पर व्यंग्य कसते हैं वे लिखते हैं–

प्रचार करते समय मीडिया ने घेरकर नेताजी से पूछा– "पिछले ढाई साल में आपकी पार्टी ने आपके ऐलानी मुद्दों का कितना प्रतिशत निराकरण किया, कृपया स्पष्ट करें।"

"सौ प्रतिशत!" नेताजी ने कहा।
"कैसे? चुनाव प्रचार तो उन्हीं मुद्दों पर हो रहा है...ढाक के तीन पात जैसा।"मीडिया ने पूछा।
"इसके बगैर कोई खास दमदार मुद्दा है ही नहीं। यही तो सदाबहार मुद्दा है। सौ प्रतिशत पार्टी के हित में। मुद्दा मुद्दा होता है, पार्टी की विचारधारा नहीं।"नेताजी ने कहा।
"तो फिर विचारधारा क्या है?" मीडिया ने पूछा।
"पार्टी को जितवाना..." कहकर 'विक्ट्री' का सिग्नल दिखाकर मुस्कराते हुए आगे बढ़े।[7]

आजकल युवा पीढ़ी फिल्मी दुनिया की तरफ बहुत आकर्षित हो रही है और हो भी क्यों नहीं वहां इतने रंगबिरंगे सपने जो दिखाए जाते हैं। चाहे उन सपनों का यथार्थ से कोई लेना–देना भले ही नहीं हो लेकिन युवाओं को वे अपने जीवन के लिए अनिवार्य लगते हैं। जो परदे पर दिखाया जाता है असल जिंदगी और उन फिल्मी लोगों का सच बिल्कुल उलट होता है। इन फ़िल्म स्टारों के आपसी संबंध और अय्याश जीवन को भी लघुकथा के रूप में हास्य और व्यंग्य के द्वारा कटघरे में खड़ा किया गया है। ऐसी ही एक लघुकथा 'नो प्रॉब्लम–कैरी ऑन एण्ड कीप इट अप' सुनील विकास चौधरी ने लिखकर पाठकों को हास्य –व्यंग्य के साथ फिल्मी सितारों के छिछले कर्मों को प्रदर्शित किया है। जिसमें एक टीवी पत्रकार दो हीरो– हीरोइन का इंटरव्यू ले रहा है। यह इंटरव्यू उनके रोमांस पर किया जा रहा है जिसमें उनपर एंकर यह आरोप लगाता है कि वे शादीशुदा होकर भी रोमान्स करते हैं। फिर उस अदालत टाइप इंटरव्यू में बैठे जनता के जज साहब इसे सही घोषित कर देते हैं और अंत में सभी लोग हंस देते हैं।

"हीरो साहब ने कुछ संकोच के साथ कहा–"देखिए, में मैरिड हूं। मेरी सुंदर बीवी है, सुंदर दो बच्चियां भी हैं। ये सब गॉसिप है।"
"कोई बंधन नहीं होता रोमांस में, उम्र की कोई सीमा नहीं होती। मैरिड बच्चे वाले मिस फिट नहीं होते रोमांस करने में।" रजत जी ने मुस्कुराते हुए कहा।
जनता के जज ने इस प्रकार फैसला सुनाया–
"रोमांस करना बुरा नहीं, फ्रेंडशिप बनाना भी बुरा नहीं पर घर फूंक तमाशे से बचकर..."
गैलरी में बैठी जनता हंस पड़ी ठहाके के साथ।"[8]

मनुष्य की पीड़ा और दारिद्र्य से उपजे रोष को व्यक्ति के मौन क्रंदन का विषय बनाकर लघुकथाकारों ने समाज के अमीर वर्ग पर तंज कसा है। यह उस वर्ग पर भी है जो खुदको भाग्यहीन समझकर अपने जीवन की उपयोगिता खोता जा रहा है। 'पत्थर की पुकार' लघुकथा में जयशंकर प्रसाद ने पत्थर के करुणामय व्यंग्य के माध्यम से गरीबी और उपेक्षा से ग्रसित जीवन की मनोदशा पेश की है। इस लघुकथा में शिलाखण्ड का एक पत्थर उसपर बैठे युवक 'विमल' से कहता

है–"मैं अपने सुखद शैल में संलग्न था। शिल्पी, तूने मुझे क्यों ला पटका? यहां तो मानव की हिंसा का वर्जन मेरे कठोर वक्षस्थल का भेदन कर रहा है। में तेरे प्रलोभन में पड़कर यहां चला आया था, कुछ मेरे बाहुबल से नहीं, क्योंकि मेरी प्रबल कामना थी कि मैं एक सुंदर मूर्ति में परिणत हो जाऊं। उसके लिए अपने वक्षस्थल को क्षत–विक्षत कराने को प्रस्तुत था। तेरी टांकी से हृदय चीरने में प्रसन्न था कि कभी मेरी इस सहनशीलता का पुरस्कार, सराहना के रूप में मिलेगा और मेरी मौन मूर्ति अनंतकाल तक इस सराहना को चुपचाप गर्व से स्वीकार करती रहेगी। किंतु निष्ठुर, तूने अपने द्वार पर मुझे फूटे हुए ठीकरे की तरह ला पटका। अब मैं यहीं पर पड़ा–पड़ा कब तक अपने भविष्य की गणना करूँगा?"[9]

प्रशासनिक लचर व्यवस्था और उसके भ्रष्टाचारी रवैये को बड़े ही सीधे–सादे ढ़ंग से लघुकथाओं में प्रकाशित किया गया है। लघुकथाकारों का उद्देश्य उनकी लघुकथाओं में आम जनता के साथ और ख़ास लोगों के साथ प्रशासन के दोहरे व्यवहार की पोल खोलना रहा है। जिससे जनता भ्रष्टाचार करने वाले प्रशासन और उसको पनपने देने वाली सत्ता के गठजोड़ से रूबरू हो सके। ऐसी ही सच बयानी करने वाली लघुकथा 'कमीशन' में श्रीनिवासन जोशी ने बतलाया है कि कैसे सरकार के आदेश होने पर भी भ्रष्ट अभियंता ठेकेदार से घूस लेता है और कमीशन की राशि बढ़ाने की बात बोलता है ताकि सरकार तक भी हिस्सेदारी दी जा सके।

"राज्य में भ्रष्टाचार निरोधक एक्ट लागू हो गया। ओमप्रकाश ठेकेदार पूर्ववत कमीशन' के पांच सौ रुपये लेकर अधीक्षण अभियंता के पास पहुंचा।

अधीक्षण अभियंता ने ओमप्रकाश और उसके हाथ में लिफाफे को देखकर कहा, "तुम्हें मालूम नहीं कि राज्य में भ्रष्टाचार निरोधक एक्ट लागू हो गया है?"

"जी, मालूम है। पर कमीशन तो..." ठेकेदार के शब्द अभी मुँह में ही थे कि अभियंता ने कहा, "जरूरत पड़ने पर वकील की फीस भी इसी से निकालने पड़ेगी। कमीशन की परसेंटेज अब बढ़ गई है।"[10]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हास्य एवं व्यंग्य की दृष्टि से लघुकथाकारों ने अपनी लघुकथाओं में रोज के कष्टों, आडम्बरों और अनीतियों का उपहास भी किया है साथ ही पाठक को झकझोरने और सोचने पर विवश करने का काम भी किया है। लेखक के व्यंग्य की असल वज़ह भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था को नकारकर एक स्वस्थ समाज की स्थापना करना रही है। सामाजिक विसंगतियों और उनसे पैदा हुई विकृतियों के प्रति लघुकथाकार सचेत दिखाई देते हैं और उन्हीं विकृतियों को इन लघुकथाओं में हास्य–व्यंग्य के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया गया है। अतः यह पुरजोर तरीके से कहा जा सकता है कि लघुकथा साहित्य हास्य एवं व्यंग्य से पूरी तरह लबरेज़ है।

संदर्भ

1. बलरामः 'रिपोर्ट– लघुकथा एक अच्छा दिन', बीसवीं सदी की लघुकथाएंः भाग तीन सं. बलराम, पृ.246
2. फूलचंद्र पाण्डेयः 'गद्य विवेचन', एस.चंद एण्ड कम्पनी, फव्वारा, दिल्ली,पृ.33
3. बलरामः 'मृगजल', पालरुल प्रकाशन, दिल्ली, पृ.94
4. सतीश दुबेः 'भीड़ में खोया आदमी', दिशा प्रकाशन, दिल्ली, पृ.10
5. अविनाशः 'स्थिति नियंत्रण में है', शास्वत प्रकाशन,शैलाभ, वस्त्रापुर,अहमदाबाद, पृ.9/10
6. उर्मिकृष्णः 'कुहनी की चोट', लघुकथा सप्तकः सं. डॉ. रामकुमार घोटड़, कपिल प्रकाशन, पिलानी झंझुनू, राजस्थान पृ. 29
7. सुनील विकास चौधरीः 'सदाबहार मुद्दा', फोकस, सुनील विकास चौधरी, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली–110030, पृ.34
8. सुनील विकास चौधरीः 'नो प्रॉब्लम–कैरी ऑन एण्ड कीप इट अप', फोकस, सुनील विकास चौधरी, अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली–110030, पृ.50
9. जयशंकर प्रसादः 'पत्थर की पुकार', बीसवीं सदी की लघुकथाएंः सं.बलराम, अमरसत्य प्रकाशन, दिल्ली–110092,पृ.47
10. श्रीनिवास जोशीः 'कमीशन', खंड1ः हथेली पर पहाड़, बीसवीं सदी की लघुकथाएं, सं. बलराम, अमरसत्य प्रकाशन, दिल्ली–110092, पृ.131